वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मई 2019

* अच्छे जन की पहचान
* मनुष्य ने की तो सुख की तलाश, परन्तु पाया महा दुःख
* यह भी सम्बन्ध महत्वपूर्ण है
* जीवन प्रसंग
* डेंगू का इलाज, लक्षण व बचाव
* विशेष सत्संग

भगवान देवात्मा फरमाते हैं

एक एक नीच अनुराग जो अपनी तृप्ति चाहता है, उसका जब मनुष्य पर अधिकार हो जाता है, तब वह विवश हो जाता है। इसलिए लाखों मनुष्य पशुओं से भी नीचे चले गए हैं। जैसे एक-एक पशु के भीतर जब भूख होती है, और खेत उस के सम्मुख होता है, तो वह स्वभावत: उसकी ओर चला जाता है, और उसे चरने लग जाता है, वैसे ही मनुष्य भी एक व दूसरी प्रवृति और उत्तेजना के वश होकर उसके विषय की ओर चला जाता है। इसलिए बड़े मूर्ख हैं वह लोग जो यह कहते हैं, कि हमारी धर्म पुस्तक में लिखा हुआ है, यह न करो, वह न करो और उससे मनुष्य धर्मवान बन जाएगा। किसी नलके का मुँह यदि खुला है, और जिस तालाब से वह पीछे जुड़ा हुआ है, उसमें पानी वर्तमान है, तो उस नलके में से पानी अवश्य गिरेगा। इसी प्रकार मनुष्य की प्रवृतियों और वासनाओं आदि का हाल है। एक-एक जन के भीतर जो प्रवृति है, वासना है, उसका मुख कौन बन्द करेगा? घोड़ा जो बन्धा हुआ नहीं और उसमें भागने की शक्ति है और वह उसे भागने के लिए प्रेरणा करती है, वह अवश्य भागेगा। फर्ज करो घोड़ा भागने लगा, परन्तु उसकी बाग तुम्हारे हाथ में है, वह तुम ने खैंची तो वह रुक जाएगा। यदि तुमने बाग न खैंची, या न खैंच सको, तो घोड़ा अवश्य भागेगा। इस तत्व को भली प्रकार से समझो। मनुष्य अपनी नीच वासनाओं और प्रवृतियों आदि को लेकर जिन सम्बन्धों में बन्धा हुआ है, उनसे वह केवल नीच ही बन सकता है, उच्च नहीं बन सकता। नीच प्रवृति अथवा वासना जिधर चाहेगी उधर ले जाएगी, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। मनुष्य अभी तक इस अवस्था में है, कि वह क्या शरीर के विचार से और क्या धन के विचार से अपनी हानि को देखकर भी उससे बच नहीं सकता। एक जन है जो धन लुटा रहा है, हम उसे कहते हैं, कि इतना खर्च न करो, तुम्हारी आमदनी की तुलना में इतना खर्च उचित नहीं, परन्तु उससे रहा नहीं जाता। बुद्धि से समझ लेता है, कि बात तो ठीक है, यदि रुपया बचाऊँ तो मेरा ही लाभ है, पर नहीं बचा सकता। वह वस्तुएँ जिनके खरीदने के लिए बहुत प्रबल अकांक्षा है, जब सामने आती हैं, तब झट लेने को तैयार हो जाता है। वह बुद्धि से समझा हुआ कुछ काम नहीं देता। कितने अमीर एक-एक वासना के वश होकर पीछे से भीख माँगते हैं। जब अय्याशी आरंभ होती है, तो किसी की नहीं सुनते और यहाँ तक पहुँच जाते हैं, कि बाह्यक विचार से भी अपनी हानि और लाभ को उपबल्ध नहीं करते, उन्हें अपनी इज्जत का भी कुछ ख़्याल नहीं होता, वह किसी की नहीं सुनते। यह प्रवृति इतनी बढ़ी हुई होती है, कि उन्हें खैंचकर ले जाती है। वह जो आजादी-आजादी पुकारते हैं, स्वाधीनता-स्वाधीनता (Liberty Liberty) पुकारते हैं, कहाँ है उनकी स्वाधीनता! वह तो एक-एक प्रवृति और वासना के दास हैं। अपने आत्मिक जीवन की रक्षा करना तो कहीं रहा, वह संसार के विचार से भी अपना नाश करने से नहीं रह सकते।

(लेख और उपदेश खण्ड-2)

सूचना

सब पाठकों की सेवा में निवेदन है कि जून माह की पत्रिका कुछेक बहुत जरूरी रूकावटों के कारण नहीं छप सकेगी। इस अभाव के लिए आशा करते हैं कि पाठक इसे दरगुज़र करके क्षमा करेंगे

- सम्पादक

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 5
मई 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अच्छे जन की पहचान

यदि किसी जन को भी ये प्रश्न किया जाए कि आप नेक इन्सान, अच्छे इन्सान या भले इन्सान बनना चाहते हैं या बुरे और बद इन्सान बनना चाहते हैं तो सबका यही उत्तर होगा कि हम भले और अच्छे इन्सान ही बनना चाहते हैं अगर उनसे आगे ये पूछा जाए कि नेक इन्सान, भला और उच्च इन्सान कैसे बनता है या अच्छे या भले इन्सान की पहचान क्या है तो शायद झट से इसका कोई जवाब न दें पायें या जवाब ढूँढने के लिए सोच में पड़ जाएँ।

अच्छे और भले इन्सान का पता उसके आचार और व्यवहार से ही लगता है। इन्सान अच्छे, मधुर, मीठे, त्याग भरे, अपनत्व को पीछे रखने वाले व्यवहारों से ही नेक और उच्च बनता है। दूसरे शब्दों में इन्सान का आचार व्यवहार या उसके सलूक ही निर्धारित करते हैं कि वह कैसा इन्सान है।

व्यवहार सदैव दूसरों के या पर के सम्बन्ध में ही होते हैं। जो इन्सान अच्छा बेटा नहीं, अच्छा भाई नहीं, अच्छा उस्ताद नहीं, अच्छा विद्यार्थी नहीं, अच्छा हैड नहीं, अच्छा मुलाजिम नहीं, अच्छा पड़ोसी नहीं, अच्छा देशवासी नहीं, अच्छा दुकानदार व व्यापारी नहीं, अच्छा ईंजीनियर, वकील, डाक्टर, या मुलाज़म नहीं आदि आदि वह नेक, उच्च और महान नहीं हो सकता।

यदि मनुष्य के आचार व्यवहार और सलूक ही मनुष्य को अच्छा और महान बनाते हैं तो अच्छे व्यवहार क्या होते हैं, कैसे होते हैं, इनको जानना और समझना जरूरी हो जाता है। अच्छे व्यवहार उस जन के होते हैं, जो दूसरों के उचित सुखों को बढ़ाने का व्यवहार करता है या जो अनुचित दुखों को घटाने की क्रिया करता है। जो दुखदाता है, बहुतों को दुःख देता है या हानि करता है दूसरे के अभाव, निवारण, उत्थान, विकास निर्माण में सहायक नहीं है वा ऐसा कोई योगदान देना नहीं चाहता वह अच्छा इन्सान नहीं हो सकता, उच्च और महान होना तो बहुत दूर की बात है। वह अल्प रूप से जालिम, कसाई, सांप, बिच्छु, भेड़िया आदि तो हो सकता है परन्तु भला और उच्च और नेक इन्सान तो बिल्कुल नहीं हो सकता। वह किसी धर्म को मान सकता है, किसी गुरू को अपना गुरू समझ सकता है, धर्म के नाम से कोई पूजा–पाठ, दुआ नमाज, रोजे तीर्थ यात्रा, सिमरण जाप कर धर्मवान होने या बनने की झूठी तसल्ली में तो रह सकता है परन्तु उच्च और भले व्यवहारों के बिना भला या नेक इन्सान नहीं हो सकता।

व्यवहार केवल इन्सान के साथी इन्सानों तक ही सीमित नहीं होते बल्कि अच्छे व्यवहार इन्सानों के

ईलावा पशुओं, पक्षियों, पेड़-पौधों, बेजान वस्तुओं, अपने काम आने वाले हितकर पदार्थों के साथ भी होते हैं। इन सब श्रेणियों के प्रति अगर हमारे व्यवहार विकासकारी, हितकर और कल्याणकारी सिद्ध होते हैं तो हम निश्चय भले व नेक बनने की राह पर होते हैं और इसके उल्ट अगर हानिकारक, दुखदायी, विनाशकारी, ध्वंसकारी कुत्सित बनाने और बिगाड़ने वाले होते हैं तो हमारा मार्ग भलाई नहीं बुराई की तरफ जाने वाला होता है।

इन्सान का सबसे नजदीकी सम्बन्ध अपने माता-पिता से होता है। जो सन्तान अपने माता-पिता को व अन्य बड़ों को अपने से बड़ा और महान नहीं देखती, सुबह उठते ही उनके चरणों में प्रणाम नहीं करती, माता-पिता को दुख न हो, उनका अपमान न हो, निरादर न हो, उनके गौरव को आँच न आए इस बात का सदैव फिक्र और डर नहीं रखती और अपने माता-पिता को सच्चे और उचित सुख देने और बढ़ाने का नहीं सोचती वह सन्तान अच्छी, भली और उच्च व सद सन्तान नहीं हो सकती। जो वजूद माता-पिता की अच्छी सन्तान नहीं बन सकता, वो अच्छा और नेक इन्सान नहीं हो सकता। जिस इन्सान के पास अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता पूर्ण व्यवहारों के द्वारा पाई गई शुभ आशीष नहीं, वह उच्च मार्ग का पथिक नहीं हो सकता।

इन्सान पशुओं से विकसित हुआ है पशु हमारे पूर्वज हैं। कोई पशु अपने बड़ों को न बड़ा देखता है, न बड़ा मानता है और न ही उनको सम्मान देने और प्रणाम करने की कोई क्रिया दर्शाता है। माँ बाप का स्थान सदा ऊँचा होता है वह स्थान अगर हम उन्हें नहीं दे पाते अर्थात सदा सम्मान करने, सदा प्रणाम करने, भद्र, नेक और सेवाकारी व्यवहार करने से चूकते और खाली रहते हैं तो हम इन्सान होना कम व पशु होना ज्यादा सिद्ध करते हैं। अच्छे और बुरे मानवीय व्यवहारों और आचारों का स्त्रोत मनुष्य के हृदय ग्राही भाव होते हैं। मनुष्य को केवल और केवल उसके हृदय के भाव चलाते हैं और कोई देवी-देवता या अन्य शक्ति नहीं चलाती। अच्छे, उच्च और सात्विक भावों से उच्च व्यवहार पैदा होते हैं। उच्च भाव ही उच्च व्यवहार का स्त्रोत है। नीच भाव नीचता के स्त्रोत हैं। वास्तव में मनुष्य के हृदय के भाव ही मनुष्य की पहचान हैं। भावों की पहचान मनुष्य के बोल-वाणी, आचार-व्यवहार अथवा सलूक से होती है। कुछ उच्च या सात्विक भावों का होना नेक और उच्च होने के लिए आवश्यक है। जिन भावों के बगैर मनुष्य नेक और उच्च नहीं हो सकता वह संक्षेप में इस प्रकार हैं :- ईमानदारी, पवित्रता, सम्मान, श्रद्धा, दया, सहानुभूति, कृतज्ञता अर्थात शुक्रगुजारी, अपनी हीनता और नीचता को देखने का भाव आदि आदि।

ईमानदारी और पवित्रता यह दोनों न्यायकारी मानव हृदय की शक्तियाँ हैं। इनके होने से और अधिक से अधिक विकसित होने से समाज में सुधार और मेल आता है। इन्सान पर हानि से और पर अधिकार के हनन करने से रुकता है। इनके होने से झूठ बोलने से भी बचता है। कपटता, हेर-फेर, प्रवंचना धोखाधड़ी से बचता है। दूसरों के दुःख घटाने और सुखी रखने का कारण बनता है। जितनी यह भाव शक्तियाँ मानव हृदय में अधिक और बलशाली होंगी उतना वह इन्सान भला और नेक और समाज में अच्छा समझा जाएगा और जितना इन भाव शक्तियों का अभाव होगा उतना ही वह भलाई और नेकी से दूर, अपने और औरों के दुःख को बढ़ाने वाला और हानिकारक जीव होगा।

शिष्टाचार, सम्मान और श्रद्धाभाव क्रमअनुसार श्रेष्ठ हैं। श्रद्धा सात्विक भाव है। यह भलाई, नेकी, उच्चता और अच्छेपन का मूल है। इस सात्विक भाव के होने से मनुष्य के क्या अपने निकटी सम्बन्धों में और क्या साधारणत: दूसरों के सम्बन्ध में नया सुन्दर, मधुर स्तर पैदा होता है। इसी भावना ने श्रवण कुमार, भीष्म, राम जैसे सपूत पैदा किए हैं। श्रद्धा भावना मनुष्य को दीन और विनम्र बनाती है, दूसरों की महानता, बड़ाई, सुन्दरता को देखने के योग्य बनाती है। उसका गुणगान करने के लिए श्रद्धावान हृदय को प्रस्तुत करती है, उसे बड़ा, महान, उच्च और अपने आपको छोटा, दीन और हीन देखने और उनके प्रति झुकने के लिए ललायित करती है और महान कारज के लिए कुछ न कुछ योगदान देने के लिए विवश करती है। सम्बन्धों की कड़वाहट, टकराहट को दूर करके सम्बन्धों में उच्च सुख और मिठास भरती है।

कृतज्ञता या शुक्रगुजारी जितना महान और उच्च सात्विक भाव है, उतना ही यह अति दुर्लभ है और मानव समाज में प्राय: लोप है। इसका पता ही इसकी अनुपस्थिति से लगता है। जहाँ कृतज्ञता का वास होता है, वहाँ स्वर्ग मँडराता है और जहाँ इसकी अनुपस्थिति होती है, वहाँ नर्क फैलता है। कृतघनता से बड़ा कोई और जघन्य और भीषण पाप नहीं। इस सात्विक भाव शक्ति से शून्य हृदय मनुष्य होकर साँप, भेड़िया, कसाई आदि जैसा हिंसक रूप धारण करता है और मानव समाज में महा नर्क पैदा करता है। विश्व भर में सम्बन्धों के बीच महा नर्क का बहुत बड़ा कारण इन्सानों का नाशुक्रापन व कृतघ्न होना है। यही भाव जहां एक तरफ औरंगजेब जैसे पत्थर दिल पुत्र बनाता है, वहाँ कृतज्ञता पन्ना, भामाशाह कर्ण जैसी महान और स्वर्गीय हस्तियाँ पैदा करती है। कुत्ते, घोड़े, हाथी सरीखे पशु जाति के जीवों में भी यह प्रकृति मिलती है और उसने मानव समाज में स्वर्गीय दृश्य दिखाए हैं। कृतज्ञता की परिभाषा शब्दकोषों, इनसाइक्लोपीडिया, इन्टरनेट आदि में भी प्राय: बहुत कुछ लुप्त है। यह कृतज्ञता से शून्यता का ही प्रमाण है।

धन्यवाद का उच्चारण या थैंक्यू कहने का नाम कृतज्ञता नहीं, यह केवल लिप सर्विस के सिवा और कुछ नहीं। कोई मनुष्य सैकड़ों हजारों उपकारियों और उनके उपकारों के बिना नहीं होता परन्तु कृतज्ञ - शून्य अन्धे हृदय को कोई बड़े से बड़ा उपकारी और उसका कोई उपकार दिखाई नहीं देता।

कृतज्ञ हृदय एक तरफ अपने उपकारियों को और उनके उपकारों को देखने के योग्य होता है और उनकी सेवा अथवा उपकारों को अपने हृदय पर ऋण की न्याई अनुभव करता है और ऋणदाताओं के और उनके ऋण के आगे सदा नतमस्तक रहता है और उनका गुणगाान करने के लिए बेबस होता है और उपकारियों के उपकार से उऋण होने के लिए सदा व्याकुल और तत्पर रहता है। अपनी बारी में अपने उपकारी के काम आकर सौभाग्य अनुभव करता है। उपकारी को दाता और अपने आपको कर्जाई देख - देख कर उपकारी के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी और त्याग करने को भी सदा तत्पर रहता है।

दया, सहानुभुति, अभाव निवारण सब सुन्दर सात्विक भाव हैं। यह दूसरों के अभाव, विपदा, मुसीबत और दु:ख को अपनी विपदा और दु:ख जैसा दर्शाते हैं। तुलसी जी ने तो दया को ही धर्म का मूल बताया है दया के बगैर बड़े से बड़ा मनुष्य वहशी, हिंसक और क्रूर बनने के लिए विवश होता है। दयावान दूसरों का दु:ख घटाने और सुख बढ़ाने के लिए अपने आपको विवश पाता है। जैसे मीठे के बगैर मिष्ठान नहीं होता और घी

के बगैर पकवान नहीं होता, वैसे ही दया के बगैर कोई भला और नेक इन्सान नहीं होता और उसका अपने सम्बन्धों में स्वर्गीय, निष्काम और सुन्दर व्यवहार का प्रदर्शन नहीं होता।

उपरोक्त भाव शक्तियों से खाली व्यक्ति अपने निकट से निकट सम्बन्धों में शुभ व्यवहार के स्थान में नारकीय आचार-व्यवहार प्रदर्शन करने के लिए विवश होता है। उपरोक्त उच्च और सात्विक भाव शक्तियों के बिना मनुष्य हिंसक, अधर्मी और कई बार और पशुओं से भी अधिक निकृष्ट व्यवहार करने लगता है।

उपरोक्त उच्च व सात्विक भाव ही भले, नेक, उच्च और महान इन्सानों के आभूषण होते हैं और उक्त भूषणों से सुशोभित होकर ही कोई इन्सान धर्म मार्ग पर चलकर, धर्म प्राप्ति में सफल होकर धर्मवान बन सकता है।

मानव जगत के महा सौभाग्य कि भारत वर्ष में विकास क्रम के सिलसिले में परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अर्विभाव हुआ है जिनका महा लक्ष्य ही मानव हृदयों में सत्य और शुभ को लाना है और मिथ्या और पाप को गारत करना है अर्थात नीच जीवन को मिटाना और उच्च शक्तियाँ उत्पन्न करके उच्च, श्रेष्ठ, नेक और भले इन्सान बनाना है।

जरूरत है कि अधिकारी आत्मा भला और नेक व अच्छा होना क्या होता है, उसे देख सकें और परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण ले सकें और उनकी ज्योति में अपनी नीचता को देखने के योग्य बन सकें जिसके बिना अपना नीच रूप दिखाई देना प्राय: असम्भव है। इससे भी आगे उच्च व धर्मवान बनने के मार्ग पर पड़ सकें और अपना सर्वोच्च हित साधन कर सकें। उपरोक्त तथ्यों को सामने रख कर देखें कि हम कहां तक वास्तव में नेक इन्सान हैं?

बलदेव सिंह

खाने के साथ चाय आयरन से वंचित होना

खाना खाने के बाद चाय-कॉफी पीना अधिकांश लोगों की आदत में शामिल है, जो गलत है। खासतौर पर सर्दियों में तो हमेशा कुछ जनों को खाने के बाद चाय चाहिए ही होती है।

गलत क्यों :-ऐसा इसलिए क्योंकि चाय की पत्ती में एसिडिक तत्व होते हैं और जब वो भोजन के प्रोटीन के साथ मिलते है तो प्रोटीन सख्त हो जाता है। इस कारण से उसे पचाने में हमारी पाचन प्रणाली को मुश्किल होती है और अधिक मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए चाय का सेवन खाना खाने के तुरंत बाद ना ही करें तो अच्छा होता है। इसके अलावा चाय में कैफीन होती है जो कि ब्लड प्रेशर को बढ़ाती है। साथ ही कैफीन की मात्रा शरीर में कार्टिसोल अर्थात स्टेरॉयड हार्मोंस को बढ़ा देती है, जिससे शरीर को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इनमें दिल से संबंधित समस्याएं, डायबिटीज़ व वजन बढ़ाना प्रमुख होती है। चाय में 'पॉलिफेनाल्स' और 'टेनिन्स जैसे तत्व होते है जो शरीर को भोजन से आयरन को सोखने नहीं देते हैं।

यदि आप चाय या कॉफी के बिना रह नहीं सकते है तो कम से कम भोजन के 1 घंटे बाद इसका सेवन करना चाहिए.... इससे तब तक खाने में पाये जाने वाले आयरन को शरीर द्वारा काफी हद तक अवशोषित कर लिया जाएगा।

मनुष्य ने की तो सुख की तलाश, परन्तु पाया महा दुःख

अमृत वर्षा

- by P.V. Kanal

प्रत्येक मनुष्यात्मा के भीतर जीवित रहने और सुखी रहने और मृत्यु और दुःख से बचने का बहुत बड़ा संग्राम जारी है। परन्तु इस संग्राम के होने पर भी लाखों और करोड़ों आत्मा कम आयु और बहुत दुःख पाते है। इसका कारण क्या? इस का मूल कारण यह है, कि सारा मनुष्य जगत नीच अनुराग और नीच घृणाओं के दासत्व में फंसा हुआ है। नाना नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं मिथ्या और दुराचारों की उत्पत्ति करते हैं। मिथ्या और दुराचार मनुष्यात्माओं की खुराक नहीं, जिस प्रकार भंग, अफ़ीम, शराब आदि नशे और संखिया आदि विष शरीर की खुराक नहीं। नेचर ने जिस वस्तु को क्या हमारे शरीर, और क्या हमारे आत्मा के लिए खुराक नहीं रक्खा, उसको नेचर की कोई शक्ति भी खुराक नहीं बना सकती। मिट्टी और पत्थर मनुष्य की खुराक नहीं। सारा मनुष्य – मात्र इक्ट्ठा होकर अपने जलसे में यह प्रस्ताव पास करले कि आज से मिट्टी और पत्थर मनुष्य की खुराक हैं, और मनुष्य उन्हें खाए, तो प्रस्ताव के पास होने से मिट्टी और पत्थर अपना स्वभाव नहीं बदल देंगे और सेब अंगूर और आम का काम नहीं देंगे। ठीक इसी तरह जो मिथ्या है, वह सत्य का काम न देगी, चाहे सारा मनुष्य जगत उस मिथ्या को सत्य ही मान ले। इसी प्रकार जो पाप और दुराचार हैं, वह शुभ और हित नहीं बन जाते। क्या यह सच नहीं, कि कुछ मज़हब ऐसे हैं कि जो भंग, शराब, तम्बाकू, गांजा आदि का सेवन ठीक और हितकर बताते हैं। क्या ऐसे मज़हब के प्रचार से यह विषाक्त वस्तुएं अमृत हो गई? यहूदी, ईसाई, इस्लाम, सिक्ख, आर्य समाज, कई ब्रह्मसमाजी, कई देवी के पुजारी, पशुओं को वध करके उन का मांसाहार करने को शुभ कार्य बताते हैं। क्या इन सम्प्रदाओं के कहने से निरापराधी पशुओं का कत्ल शुभ और हित में परिवर्तित हो गया है? क्या अल्ला मियां का बकरीद के दिन करोड़ों पशुओं का कत्ल करना ठीक बताने से यह महा भयानक खून का अमल खून नहीं रहता? क्या इस प्रकार का खून करने वाले जनों का हृदय महा कठोर, निर्दयी नहीं हो जाता? एक – एक मज़हब को मानने वाले करोड़ों ईर्षा परायण जन अपने सम्प्रदाय द्वारा नीच घृणा का भड़काना उचित समझते हैं। क्या उनके इस फ़तवे से नीच घृणा अपना स्वभाव बदल देती है? क्या वह नीच घृणा अपने फल नहीं लाती? पश्चिमी पंजाब के मुसलमानों ने इसी नीच घृणा से परिचालित होकर हिन्दुओं और सिक्खों पर बहुत भयानक अत्याचार किए थे। यह याद रखना चाहिए, कि जिस वस्तु को नेचर ने विष रखा है, वह विष ही है, और विष ही रहेगी, चाहे एक – एक समय में सारा मनुष्य जगत इस सचाई से विमुख रहे। मिथ्या और दुराचारों ने जो ज़हरीले फल उत्पन्न किए हैं, वह उसके स्वभाव के अनुसार हैं।

नीच सुख अनुरागों को नेचर ने मनुष्य के आत्माओं के लिए ज़हर बनाया है। इसलिए नीच सुखों के आकांक्षी जनों के लिए इस विष से विषाक्त होकर दुःखों को पाना आवश्यम्भावी है।

नीच सुख अनुरागी जन अपने जीवन से तीन प्रकार के फल उत्पन्न करता है, वह यह है :

1. नीच सुख अनरागी जन मोटे – मोटे पापों को करने के लिए अपने आपको मजबूर पाता है। ऐसा जन धन के सुख अनुराग से परिचालित होकर चोरियां

करता है। रिश्वतें लेता है। कम तोलता है। कम नापता है। ठग्गियां करता है। विश्वास-घाती बनता है। झूठी गवाहियां देता है। झूठे मुकदमें लड़ता है और कई सूरतों में कई ग़रीबों के घर उजाड़ देता है।

2. नीच सुख अनुरागी जन देवसमाज के नियत आठ पापों को छोड़ कर भी, दयानतदारी से पैसे कमा कर भी, अपनी पत्नी के सम्बन्ध में वफादार रहकर भी, और इसी प्रकार किसी के माल, इज्ज़त और जान को कोई हानि न पहुंचा कर भी कई प्रकार के मोह बन्धनों में फंस जाता है। और इसलिए दयानतदारी से कमाए हुए धन को किसी काराण से जाता हुआ देखकर इस कदर चोट खाता है, कि कई सूरतों में पागल हो जाता है। अपनी प्रिय पत्नी या प्रिय बच्चे की मृत्यु से इस कदर दुःख की आग में पड़ जाता है, कि कई सूरतों में घुल-घुल कर मर जाता है। अपने घर या नगर के साथ इस कदर बन्ध जाता है कि अपनी आत्मिक उन्नति के लिए अपने घर और गांवों से कुछ काल के लिए भी बाहर नहीं जा सकता। यह सच है, कि लाखों और करोड़ों मोटे-मोटे पाप करने वाले जन जेलों में बन्द किए जाते हैं या फांसी पर चढ़ाए जाते हैं और कई तरह से सरकारी दण्ड भुगतते हैं, परन्तु यह दूसरी प्रकार के शरीफ जन मनुष्य सरकार से तो दण्ड नहीं पाते, लेकिन नेचर के अटल नियमानुसार नीच सुख अनुरागों से उत्पन्न किए हुए कई प्रकार के मोह बन्धनों की भयानक सज़ा जरूर पाते हैं।

3. नीच सुख अनुरागी जन मोटे-मोटे पाप न करके भी अपने धन, अपनी पत्नी और अपने बच्चों से मोह बन्धनों से न बन्ध कर भी, बाह्यक नाम, यश, पद और बाहर की ताकत आदि के भूखे होकर इस कदर अन्याय की आग भड़काते हैं और इस कदर औरों पर ज्यादतियां करते हैं, कि जिस से नीच सुख अनुरागों का रूप अधिक रौशन हो जाता है। ऐसे नीच सुख अनुरागी जन इस मिथ्या तसल्ली में रहते हैं, कि हम तो कोई मोटा पाप नहीं करते, न हम अपनी धन सम्पत्ति से जुड़े हुए हैं। न हमारे पत्नी है, न बच्चे हैं और यदि हैं भी तो हम उनके साथ बन्धे हुए नहीं हैं। हम उनसे पूछते हैं, कि यदि हम मान भी लें, कि तुम्हारी ऐसी अवस्था है, तो फिर तुम जिस पदवी को पदवी समझते हो, उसके पाने के लिए अन्यायकारी गतियां क्यों करते हो? दुःखी क्यों होते हो और जिस किसी के पास वह पदवी और ताकत है, उसके सम्बन्ध में नीच घृणा क्यों करते हो? और उस पदवी को छीनने के लिए उस पर अत्याचार क्यों करते हो? एक-एक जन सरकार से नाम पाने की ख़ातिर, किसी राजनैतिक समूह में किसी पदवी के पाने के लिए, किसी सोसाइटी या समाज में किसी ताक़त या सत्ता को लाभ करने के लिए, चाहे ऐसे नाम या पदवी पाने या ताक़त लाभ करने में कोई धन का लाभ न भी हो, बल्कि धन देना ही पड़ता हो, तो भी जिस तड़पन में से गुज़रता है, जिस प्रकार की अन्यायकारी वा अशुभकर गतियां करता है, वह दृश्य बहुत डरावना है। एक-एक जन ऐसी पदवी से गिराए जाने से अकाल मृत्यु का शिकार हो जाता है।

4. नीच सुख अनुरागी जन बहुत सी सूरतों में ऐसे दो आत्मिक रोगों के रोगी हो जाते है, कि जिन रोगों के रोगी होकर वह बिन पानी मछली की न्याई तड़पते हैं। यह दो आत्मिक रोग घमण्ड और ईर्षा हैं। इन दो रोगों के रोगी जन असम्भव बातों के आकांक्षी हो जाते हैं। घमण्डी जन यह चाहता है, कि महिमा हो तो मेरी हो और किसी की न हो। अब यह कहां सम्भव है? दुनियां में बहुत सारे जन ऐसे हैं कि जिनकी महिमा होगी। अब इस घमण्डी जन को सिवाय तड़पने के और कुछ हाथ न आएगा। ईर्षा परायण जन यह चाहता है, कि जो कुछ बरकतें मिल सकती हैं, वह

शेष पृष्ठ 20 पर

यह सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण है

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा हर पहलू में अद्वितीय है। आज तक कोई ऐसा गुरु नहीं हुआ कि जिसने सम्बन्धों में कर्तव्य कर्मों वा वर्जित कर्मों की शिक्षा दी हो - 16 सम्बन्धों में उनकी शिक्षा है, माता-पिता सन्तान, भाई बहन, पति पत्नी, देश जाति, भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत, मनुष्य मात्र आदि। आजकल के दिन भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में चल रहे हैं, जब तक यह पत्रिका आप तक पहुँचेगी, तो यह दिन तो समाप्त हो जाएंगे, परन्तु यह सम्बन्ध अर्थात नौकर मालिक का सम्बन्ध निरन्तर और सम्बन्धों की तरह चलता रहेगा। इस सम्बन्ध में तो कोई धर्म सोच भी नहीं सकता।

कुछ सम्बन्ध तो Multi-national कंपनियों के मालिकों वा उनके employees का होता है, उसमें तो कुछ न कुछ अनुबन्ध होते हैं जहां काम करने वाले वा मालिकों के साथ होते हैं, वहां भी employees की ओर से जहां कर्तव्य निष्ठा होती है, वहां काम चोरी भी होती है। मालिक भी जितना पैसा देते हैं उससे बहुत अधिक काम लेते हैं।

हमारा यहां अभिप्राय: उन सहायकों से है, जो हमारे घरों में काम करते हैं और दिन प्रतिदिन के कामों में हमारी सहायता करते हैं। इसको छोटे स्तर का काम समझा जाता है। जबकि वह हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। उनकी सहायता से हमारा जीवन सरल और सुखद रहता है। अकसर होता है कि आपका सफाई में सहायक बीमार हो जाता है और उसका काम आपको करना पड़ता है, उमर के इस पड़ाव पर जब आप झुक नहीं सकते लेकिन यह एक आवश्यक कार्य होने के कारण उसको छोड़ भी नहीं सकते, फिर उसके काम का महत्व दो दिन में उसकी गैरहाज़री में समझ आ जाता है।

नौकर भी इन्सान हैं, उनका यदि गरीब घर में जन्म होता है और आप उनसे सम्पन्न हो तो यह उनका कसूर नहीं। हम अपना सौभाग्य उनसे share करते रहें ताकि हमारे घर में काम करना भी वह अपना सौभाग्य समझें।

वेतन भी उनके काम के अनुसार अवश्य दें और समय पर दें, यदि कभी काम अधिक करता है या पहले से अच्छा करता है, तो उसकी सराहना भी करें और कुछ ईनाम भी दें। यदि भोजन पकाने वाला स्वादिष्ट भोजन बनाता है और उसकी सराहना होती है तो कभी ठीक न बनने पर प्यार से कह देंगे कि यह चीज़ ठीक नहीं बनी तो वह उसको बुरा नहीं लगेगा।

आपके सहायकों का लिबास उनके स्तर का नहीं आपके अपने स्तर का होना चाहिए, उनके बिस्तर साफ और आरामदायक हों। कभी आप बाहर घूमने जाते हो तो उनके लिए कोई तोहफें लाएं। मैं तो विदेश जाती हूं तो हमेशा उनके लिए विदेशी चीजें लाती हूं। मेरे बच्चे आते है तो सबके लिए तोहफे लेकर आते है, खुली नकदी देकर धन्यवाद करते हैं कि आप लोग हमारे माता पिता की सेवा करते हो। हम नौकर-मालिक का दिन मनाते हैं, उन्हें उनकी

पसन्द का स्वादिष्ट भोजन खिलाते हैं, नकदी देते हैं और फूलों के हार डालकर उनका सन्मान वा धन्यवाद करते हैं। हमारे समाज के सब घरों में यह ब्रत अवश्य मनाया जाना चाहिए, यह गुरू की अद्वितीय शिक्षा को दर्शाता है।

नौकर के बीमार होने पर उसका पूरा फिक़र वा ईलाज करवाना भी मालिक का कर्तव्य है। उसके नहाने धोने और आराम के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए। खाने पीने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। कई घरों में मालिक स्वयं सहायकों को खाना डालकर देते हैं ताकि पुरानी चीजें देकर काम चल जाए, यह नियम बना लें कि जब वह किचन में खाना खा रहे हैं तो वहां न जाएं ताकि वह अपनी मर्जी से खुलकर खा सकें। हमारा पेट भरने वालों को कम या ठीक भोजन न मिले तो यह अन्याय है।

सबसे मुख्य बात है कि वह एक तो बहुत सुसभ्य घरों से नहीं होते, दूसरा वह इन्सान हैं, उनसे गल्तियां भी होंगी उन्हें दरगुजर करना चाहिए। मैंने तो देखा है कि यदि मैं कभी बर्तन धोती हूं तो मेरे से कांच के बर्तन ज़्यादा टूटते हैं, यदि उनसे टूटते हैं तो इसे बड़ी गल्ती न बनाएं, सावधान रहने के लिए कह सकते हो। छोटी छोटी बातों पर खीजना, बुरा भला कहना, ऊंचा बोलना, हाथ उठाना, यह सब बातें सम्बन्ध में कड़वाहट भर देती हैं। यदि लगातार ग़ल्तियां हो रही हैं तो बैठकर समझाएं या उसका हल ढूंढ़े। मुझे यह शिकायत रहती थी कि हमारे सहायक काम करते हुए भी फोन पर लगे रहते थे, बहुत बार समझाया, परन्तु आख़िर उसका हल यह निकाला कि सुबह उनसे फोन लेकर रख लें और दोपहर के बाद दे दें। इससे उनके काम में भी सुधार हो गया और बार 2 टोकना भी नहीं पड़ा। अनुशासन रखने के लिए कई दफा कोई निर्णय लेने पड़ते हैं।

हम उनमें perfection न ढूंढे, यह तो बड़ों बड़ों में नहीं मिलती। हम न भूलें कि यदि वह इतने योग्य हों तो हमारे अधीन काम क्यों करेंगे? उनके गुण दोषों के साथ स्वीकार करें जैसे हम अपने बच्चों को करते हैं।

इससे आगे उनके शारीरिक, मान्सिक और हार्दिक विकास का यत्न करें। अच्छी खुराक दें और यदि सम्भव हो तो उन्हे पढ़ाने और उनकी आदतों वा उन्हें और सभ्य बनाने का यत्न करें। मेरे पास जितने सहायक रहें हैं, तो उनको पढ़ाने का यत्न किया है। अब मेरे पास एक लड़का है जो बहुत दिमागी है। बहुत ज़ोर लगाकर बार 2 अपने पास बुलाकर उसे कुछ हिन्दी और थोड़ी बहुत अंग्रेजी सिखाई परन्तु उसका पढ़ने को दिल ही नहीं करता, यह अलग बात है लेकिन हमें अपनी तरफ से कोशिश अवश्य करनी चाहिए।

हम तो सभाओं में अकसर सुनते हैं कि मनुष्यों में कृतज्ञता का भाव शून्य जैसा ही है। उन लोगों से यह उम्मीद रखकर नहीं चलना चाहिए कि वह हमारा अच्छा व्यवहार पाकर भी कृतज्ञ रहेंगे, परन्तु हम उनकी सेवाओं को पाकर अवश्य कृतज्ञ बनें। उन्हीं की सेवाओं के कारण हम बहुत सुखमय और सुविधाजनक जीवन जी सकते हैं और जी रहे है।

-सुरजीत बराड़

जीवन प्रसंग

<u>विनम्रता ही विद्वान का आभूषण</u>

जिस व्यक्ति में यह गुण नहीं, वह चाहे कितना ही ज्ञानी क्यों न हो, उसे अहंकार का जीता-जागता पुतला ही माना जाएगा।

संसार में अशिक्षित लोग चाहे बहुत बड़े देशभक्त न मालूम पड़ते हों पर वे अपने देश का अहित नहीं करते। विनाश का रास्ता तैयार करने वाले शिक्षित लोग ही ज्यादा हैं। बड़े-बड़े बम, विध्वंस के साजो-सामान कौन बनाता है। यही जो पढ़े-लिखे अतिशिक्षित लोग हैं। जब विज्ञान का विवेक-सम्मत प्रयोग नहीं होता तो उसकी मंजिल विनाश ही होती है। जब विवेक और विज्ञान साथ-साथ चलेंगे तभी असली प्रगति सामने आएगी।

शक्ति प्रदर्शन का अधिकारी कौन है? क्या वह जिसके पास बड़ी-बड़ी शैक्षणिक योग्यताएं हैं और जो अपने ज्ञान के घमंड से फूला नहीं समाता? नहीं, तो फिर क्या वह जो दावा करता है कि उसे सारी सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं और अपनी इच्छा अनुसार वह उनका उपयोग कर सकता है, नहीं। कोई भी व्यक्ति जो घमंड और धोखे से भरा है उसे शक्ति प्रदर्शन का अधिकार नहीं। व्यक्ति जो विनम्रता से भरा हुआ है और जो अपने ज्ञानी होने का दिखावा नहीं करता, सत्ता उसी को दी जानी चाहिए।

ऐसा ज्ञान जिसका प्रचार किया जाता है उस बीज के समान है जिसे दिखावे के लिए चट्टान पर बो दिया गया है ताकि सब उसे देख सकें। इसमें न तो अंकुर फूटेंगे, न ही फल लगेंगे। मिट्टी में बोए हुए बीज ही वृक्ष बनेंगे और उनमें ही फल लगेंगे। वही विद्वान जो विनम्र है और जिसमें सबके प्रति सम्मान है, वास्तव में महान है। जिस व्यक्ति में यह गुण नहीं, वह चाहे कितना हो बड़ा ज्ञानी क्यों न हो, उसे अहंकार का जीता जागता पुतला ही माना जाएगा। एक सच्चे शिक्षित व्यक्ति को तो रंचमात्र भी अंहकार नहीं होना चाहिए।

<u>बेटियां कहीं भी सुरक्षित नहीं, ना पैदा होने से पहले ना बाद में :</u>

यूं तो ये पुराना विषय है, लेकिन आज भी समाज में फैला हुआ है तो इस पर बात जरूर करनी होगी। मैं यहां पर बात कर रही हूं कन्या भ्रूण हत्या के बारे में। जानती हूं, आप सोचंगे कि वही उपदेश होगा, लेकिन अगर आपको यह उपदेश लगता है तो उपदेश समझ के ही सही, लेकिन इसे जरूर पढ़ें। मैंने कन्या भ्रूण हत्या के बारे में जो समझा है वह यह कि यह हमारी पुरानी विचाराधारा से उपजी है। इस विचारधारा के अनुसार लड़का ही परिवार के लिए सब कुछ होता है। एक औरत जो संसार रचती है, उसको जबरदस्ती लिंग जांच जैसा अपराधिक काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, इनमें अनपढ़ और पढ़े लिखे दोनों वर्गों के लोग शामिल हैं।

भारत में कितनी देवियां है, जिनकी अर्चना की जाती है। नवरात्रों में बच्चियों को कंजक के रूप में पूजा जाता है, लेकिन उस दौरान लोग इधर-उधर सभी घरों में लड़कियों को ढूंढते रहते हैं, उन्हें घर बुलाते हैं, पैर धोते हैं, लेकिन फिर भी दिल में इस तरह का पाप लिए घूमते हैं। यह दो तरफा सोच रखकर कोई कैसे जी सकता है, या तो आप पूरी तरह इंसान बन जाइए या खुद को पूरी तरह से जानवर घोषित कर दीजिए। कन्या भ्रूण हत्या जैसा दुष्कर्म करके आप

इंसानियत को शर्मसार कर रहे हैं। मैं मानती हूं कि एक लड़की के लिए कोख के बाहर की दुनिया भी उतनी ही खतरनाक है जितनी अब कोख के अंदर हो गई है। बाहर कई पापी उनके साथ रेप और छेड़छाड़ जैसा अपराध करते हैं और गर्भ में तो उनकी हत्या ही करा दी जाती है। खैर, जो भी हो हम एक बेहतर समाज की कल्पना ही कर सकते हैं, हमें लड़ना होगा, बेहतर समाज के लिए जरूरत होगी कई बेटियों की जो किरण बेदी, लता मंगेशकर और कल्पना चावला बनेंगी, बस शर्त सिर्फ इतनी है कि आप उन्हें दुनिया में आने तो दें।

मोह नहीं, यह तो है त्याग !

एक पक्षी ने अपने चूजों को बचाने के लिए पेड़ के साए में जल जाना स्वीकार किया, उड़ जाना नहीं ।

गरमी का मौसम अपने चरम पर था। तापमान40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर था। दोपहर में यकायक राष्ट्रीय पार्क के जंगल में आग लग गई। दावानल नरक की आग की तरह पेड़-पौधे, घास, पशु-पक्षी सबको लीलता हुआ चारों दिशाओं में बढ़ रहा था। पार्क प्रबंधन की ओर से कई जतन किए गए लेकिन आग तो खुद-ब-खुद ही बुझी और वह भी दो दिन बाद। तब पार्क के प्रधान संरक्षक नुकसान का जायजा लेने के लिए निकले।

चारों ओर राख, सुलगते दरख्त और धुएं के अतिरिक्त कुछ नजर नहीं आ रहा था। मैदान, झरने पार कर वह जब एक पठार पर पहुंचे तो एक दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गए। एक जले हुए पेड़ के नीचे जलकर काले कोयले के समान हो चुका एक बड़ा सा पक्षी खड़ा था। वह किसी मूर्ति की तरह लग रहा था। पक्षी की ऐसी मौत देखकर उन्हें घोर आश्चर्य हुआ। पक्षी की मुद्रा बता रही थी कि उसने उड़कर बचने की कोई कोशिश ही नहीं की जबकि पशु-पक्षी तो आग को देखकर ही भाग खड़े होते हैं। कुछ ऐसा लग रहा था मानों उसने जान-बूझकर जलकर मरना स्वीकार किया हो। उसने अपनी लकड़ी से पक्षी को धकेला तो वह सूखी लकड़ी की तरह एक तरफ गिर पड़ा लेकिन उसके नीचे दो चूजे दिखाई दिए। वे सकुशल थे और चहचहा रहे थे। आग से किसी हालत में रक्षा न होते देख उस पक्षी ने अपने बच्चों को पंखों के साए में छिपा लिया था और दावानल की आग में प्राणों का उत्सर्ग कर अपने बच्चों की रक्षा की। अपने बच्चों की रक्षा का बोध सभी जीवों में होता है। इसी भावना से प्रेरित होकर जीव उनकी रक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने से भी नहीं हिचकते। यह मोह नहीं वरन प्रेम का अहं केन्द्र से बाहर की ओर विस्तार है। दूसरों के लिए अपने जीवन का त्याग जीवन के प्रवाह का सबसे उदात्त पहलू है, जब वह भाव समस्त जगत के लिए हो जाए तो संसार स्वर्ग बन जाता है।

(दैनिक भास्कर)

सेवक उत्सव

सभी पाठकों और साथी सेवकों को सूचित किया जाता है कि आने वाला साथी सेवक उत्सव 15, 16, 17 जुलाई, 2019 सोम, मंगल और बुधवार को कल्याण (बठिण्डा) में मनाया जाएगा। सभी साहिबान कृप्या नोट फरमाएं

- मन्त्री

डेंगू का इलाज, लक्षण व बचाव

डेंगू वायरसजनित बीमारी है। ये बीमारी मच्छर से फैलती है और इसका सबसे पहला लक्षण तेज बुखार है। इस बीमारी के दौरान शरीर के प्लेटलेट्स कम हो जाते हैं। डेंगू एडीज नाम के मच्छर से फैलता है। हर साल बरसात के महीने में ये बीमारी फैलती है, जिसमें हज़ारों लोगों की जान चली जाती है।

डॉक्टर बताते हैं कि शरीर में 1 मिली खून में 30 - 40 हजार प्लेटलेट्स होती हैं। ये प्लेटलेट्स रोज नष्ट होती हैं और रोज बनती रहती है। डेंगू होने पर शरीर के काम करने की गति धीमी पड़ जाती है, जिससे प्लेटलेट्स बनने की गति भी धीमी हो जाती है। ऐसे में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी गिरने लगती है। डेंगू का मच्छर ज्यादातर दिन में काटता है और ये साफ पानी में फैलता है। मादा एडीज कूलर, ड्रम, टंकी और गमलों में इक्ट्ठे पानी में अंडे देती है, यही से डेंगू फैलता है।

डेंगू के लक्षण :

एडीज मच्छर के काटने के बाद डेंगू का वायरस शरीर में पहुंच जाता है। इस बीमारी का मुख्य लक्षण तेज बुखार होता है। इसके बाद सिर दर्द, जोड़ों और मांसपेशियों में भी दर्द होता है। शरीर पर लाल चकते भी दिखाई पड़ते है। इसके अलावा उल्टी, दस्त, पेट में दर्द, कमजोरी और भूख न लगना भी डेंगू के लक्षण है।

डेंगू का इलाज :

1. डेंगू में नीम, तुलसी, गिलोय, पिप्पली, पपीते की ताजी पतियों का रस, गेंहू की बालियों का रस, आंवला और एलोविरा का रस पीने से फायदा मिलता है। रस से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और प्लेटलट्स के निर्माण में तेजी आती है।
2. **पपीते की पत्ती :** डेंगू में प्लेटलेट्स की रिकवरी के लिए पपीते की ताजी पत्तियों के रस को बहुत उपयोगी माना जाता है। इस रस को बनाने के लिए कुछ पत्तों को पानी से अच्छी तरह धोकर पीस लें। ध्यान रखें, पत्तियां नई उगी हुई ताजी हों। इन पत्तियों के अर्क को दिन में दो-तीन चम्मच डेंगू के मरीज को पिलाएं। ये शरीर से टॉक्सिन बाहर निकालता है साथ ही प्लेटलेट्स की मात्रा तेजी से बढ़ती है।
3. **गिलोय का काढ़ा :**
25 ग्राम ताजी गिलोय का तना लेकर कूट लें, 5 - 6 तुलसी के पत्ते और 3 - 4 काली मिर्च पीसकर 1 लीटर पानी में उबालें। पानी को तब तक उबालें जब तक ये 250 मिली न रह जाए। इसे तीन हिस्सों में बांट लें। डेंगू फैलने पर ये काढ़ा पीएं इसे वायरल इन्फेक्शन के बचाव के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
4. **तुलसी :**
तुलसी की पत्तियां हर तरह के वायरल में लाभकारी होती हैं। इसकी पत्तियों को चाय में डालकर रोजाना पीने से वायरल से बचाव होता है। डेंगू के मरीज को पानी में तुलसी की पत्ती उबालकर दें, इससे शरीर को रोग से लड़ने की ताकत मिलती है। अनार और चुकंदर का जूस - डेंगू के मरीज के लिए लाभकारी होता है। अनार खून की कमी को दूर करता है।

5. **एलोविरा :**
एलोविरा का जूस प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है और पाचन शक्ति ठीक रखता है। डेंगू होने पर मरीज को एलोविरा का जूस या नेक्टर (मकरंद) दें, ये शरीर को शक्ति प्रदान करता है।

6. **आंवला :**
आंवले में विटामिन सी होता है, ये शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। वहीं शरीर में पहुंचकर लौह तत्व का ज्यादा अवशोषण करता है, जिससे खून बढ़ता है।

ये सारे उपाय डेंगू के लक्षणों को कंट्रोल करने के लिए हैं आराम न मिलने की स्थिति में डॉक्टर का परामर्श जरूर लें।

डेंगू से बचाव

डेंगू से मुकाबला करना मुश्किल है और इसके वायरस के संक्रमण के बाद तेजी से प्लेटलेट्स गिरती हैं। इस स्थिती में संभलने का वक्त नहीं मिलता, इसलिए इससे बचाव रखना भी बेहद जरूरी है।

1. ध्यान रखें कि घर में कहीं भी पानी इकट्ठा न हो। सफाई का खास ख्याल रखें।
2. कूलर वगैरह का पानी वक्त पर बदलते रहें और कूलर साफ करें। जहां भी पानी इकट्ठा हो रहा हो उसमें मिट्टी का तेल डाल दें ताकि अंडे विकसित न हो सकें।
3. गमलों में भी पानी इकट्ठा न होने दें। मिट्टी नम रखें बाकी पानी गिरा दें।
4. बर्तन धोने वाली जगह पर भी पानी न इक्ट्ठा होने दें, हो सके तो बर्तनों को उलटा करके रखें।
5. घर में मच्छर मारने के उपाय करें। नीम की पत्तियां जालाएं, मॉसक्वीटों रिपेलेंट लगाएं और मच्छरदानी लगाकर सोएं। बच्चों को भी पूरे कपड़े पहनाकर सुलाएं और दिन के वक्त खासकर मच्छर भगाने के इंतजाम रखें।
6. कपूर के धुएं से भी मच्छर भागते हैं, कपूर को दीए में रखवकर जलाएं और हर कमरे में धुआं करें। अगर घर में किसी को डेंगू हो गया हो तो विशेष ध्यान रखें।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : –श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

विशेष सत्संग

श्रीमान मेहर सिंह जी के विशेष उत्साह से मल्लेका (सिरसा) में पति पत्नी व्रत के समय विशेष सत्संग रखा गया। यह प्रोग्राम 18 मार्च से 21 मार्च सुबह तक हुआ। जिसमें कुल आठ सभाएं हुई। इस प्रोग्राम के लिए केसूपुरा, मल्लेका के धर्म सम्बन्धियों की ओर से बहुत उत्साह, प्रेम वा सहयोग से तैयारियां की गई। साधन मन्दिर की विशेष रूप से सफाई बिछाई की गई। अन्दर से सड़क तक आंगन को बहुत साफ सुथरा बनाया गया। मन्दिर को रंग रोगन करवाया गया, ऊपर सुन्दर लड़ियां लगाई गईं जो रात को जगमगाती थी। गुरू महाराज की बड़ी सुन्दर छवि को आसन बनाकर स्थापित किया गया। इस प्रोग्राम में शामिल होने के लिए राजस्थान में से गजसिंहपुर, गंगानगर, पदमपुर, पंजाब में से डेराबस्सी, चण्डीगढ़, गोनियाना, बंठिड़ा, संगरूर, थराजवाला, महिमा सवाई और इसके ईलावा लखनऊ, मेरठ, हिसार आदि स्थानों से भी धर्म सम्बन्धी पहुँचे। तर्कशील सोसाईटी के कार्यकर्ता भी इस सत्संग के लिए पधारे। धर्म सम्बन्धियों को ठहराने का प्रबन्ध श्रीमान सुखदेव जी जोसन के घर रखा गया, सुबह शाम नाश्ते और लंगर आदि का भी इनके घर बहुत खुले स्थान पर प्रबन्ध किया गया। बाहर से आए कुछ धर्म सम्बन्धियों को और कुछ घरों में भी बड़े सम्मान पूर्वक ठहराया गया। धर्म सम्बन्धियों को खाने वा सभाओं में लाने के लिए कुछ जनों ने अपने वाहनों का प्रयोग किया, बाकी प्रिंसीपल सिरताज सिंह जी ने अपनी बस की सेवा दिली भावों से दी।

इन सभाओं में केसूपुर और मल्लेका के बहुत से धर्म सम्बन्धी वा उनके परिवार भी सहायक होते रहे। हिसार से आए राधेश्याम जी दो दिन सुबह योगा और प्राणायाम करवाते रहे। अच्छी सभाएं सुबह शाम होती रही, 100 के करीब भी जन हो जाते थे। दो दिन दोपहर को भी सभा रखी गई।

18.03.2019, रात 8.00 बजे :- गुरू महाराज का छवि द्वारा सुन्दर फूलों से अर्चन किया गया। भजनों के बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि इस सत्संग पर विश्वासों पर नहीं अमलों पर ज़ोर दिया जाता है। बुरे वातावरण के प्रभावों से कोई नहीं बच सकता। छोटे 2 बच्चे खराब वातावरण में कुछ दिनों में ही गालियां सीख गए। ठीक वातावरण में आकर इस बुराई से बच गए। देव समाज अच्छे अमल करने का उच्च वातावरण प्रदान करती है। इसके उदाहरण पेश किए।

माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि, वातावरण जितना सूक्ष्म है, उतना ही विशाल है। परन्तु वातावरण की हमें पहचान न के बराबर है। हम कोशिश करें कि अच्छे वातावरण में वास करें।

19.3.2019, सुबह 9.00 बजे :- भजनों के बाद सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि हर इन्सान अच्छा बनना चाहता है, परन्तु अच्छा इन्सान कैसे बना जाए, इसका ज्ञान नहीं। अच्छा बनने के लिए पहले बुरी आदतें, बुरे व्यवहार छोड़ने पड़ते हैं। उसके बाद अच्छे भावों से अच्छे व्यवहार करने पड़ते हैं। मनुष्य के लिए सुख अनुरागी प्रकृति रखकर पाप और मिथ्या की ओर जाना आवश्यक है। भगवान देवात्मा जो सचाई भलाई के अनुरागी है और पाप मिथ्या के शत्रु हैं, उनकी ज्योति शक्ति मनुष्य को अच्छा बनने की होश देती है। और कोई मार्ग नहीं।

19.3.2019, दोपहर 3.00 बजे :- इस सभा में पहले गोपाल कृष्ण जी ने और फिर मेहर सिंह

जी ने गुरु महाराज की महिमा सम्बन्धी अपने विचार रखे।

इसमें बताया गया कि अन्धापन क्या होता है, कितने प्रकार का होता है और उसके क्या परिणाम होते हैं? स्थूल अन्धापन और दिमागी अन्धेपन के बाद हार्दिक अन्धेपन के बारे में फरमाया गया कि जिसकी सबसे बड़ी हानियां है। गुरू महाराज हमारे हार्दिक अन्धेपन को दूर करने की क्षमता रखते हैं।

19.03.2019, रात 8.00 बजे :- दो भजनों के गान के बाद सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने शक्ति तत्व के बारे में फरमाया कि शक्ति हलचल पैदा करती है। उन्होंने बताया कि कोई भी हरकत बिना ताकत या शक्ति के नहीं होती। उन्होंने मनुष्य ढांचे के अन्दर की शक्तियों के बारे में बताया कि नशे की शक्ति और काम वासना की शक्ति बहुत भयानक शक्तियां हैं, जिनके कारण मानवता नर्क का नमूना बनी हुई है। इन शक्तियों के आगे बड़े बड़े पण्डित, मौलवी और प्रचारक मजबूर हो जाते हैं और अपना और औरों की इज्जत, सम्मान आदि का भी नाश करते हैं।

बड़े 2 पदधारी, गवर्नर, वजीर, मुख्य मन्त्री आदि अपनी प्रेरिक आन्तरिक शक्तियों से महा, अबोधी रहकर और उनके चुंगल में फंसकर जेलों में अपनी उमर बर्बाद कर रहे हैं। इन शक्तियों के हृदय विदारक उदाहरण पेश किए गए।

20.3.1019, सुबह 9.00 बजे :- एक महिमा सम्बन्धी भजन के गान के बाद, एक कृतज्ञता विषयक भजन गाया गया। इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि जिस मनुष्य को दूसरों की महानता नहीं दिखाई देती, वह धर्मवान नहीं बन सकता। हमारे अस्तित्व का आरम्भ, निर्माण और पालना दूसरों के द्वारा होती है। हमारे दुख, पीड़ा और कठिन समय में सहायकारी फरिश्ते बनकर खड़े हो जाते हैं परन्तु हम अपने अन्धेपन में उनको न देखते हैं न उनको जानते हैं। उपकारियों के उपकार वा गुणवानों के गुण देखकर उनके आगे झुकने का और उनके काम आने का कोर्स करना है। कृतज्ञता की हृदयों को छूने वाली घटनाएं पेश की गईं।

20.3.2019 दोपहर 3.00 बजे :- यह सभा श्रीमान राधे श्याम जी (हिसार) ने करवाई। उन्होंने "धर्म की महिमा सन्मुख लाऊँ" नामक भजन के गान के बाद बताया दुनिया में धर्मों की संख्या अनगनित हैं जो अलग शिक्षा देकर गुमराह कर रहे हैं, इससे दुनिया में निराशा भी फैल रही है। धर्मों में मनुष्य को नेचर के सम्बन्ध में, पाप-पुण्य के सम्बन्ध में और उससे मुक्ति के सम्बन्ध में मिथ्या और हानिकारक शिक्षा दी गई है। परम पूजनीय भगवान ने हर पहलू में न केवल सत्य और शुभ मूलक शिक्षा दी है, बल्कि स्वयं सच्चाई और भलाई भरा अद्वितीय जीवन जीकर दिखाया है, जिससे प्रेरित होकर मनुष्य अपनी योग्यता अनुसार भला और सच्चा जीवन पा सकते हैं। (आपका ब्यान बहुत सुन्दर, प्रभावदायक था। हाजरीन में खुशी और उत्साह था।)

20.3.2019, रात 8.00 बजे :- सभापति जी ने बताया कि नेचर में बुरे अस्तित्वों के विनाशकारी परिणामों से अलग विकास का क्रम भी निरन्तर काम कर रहा है। पिछले समय में लडकियों को मार दिया जाता था, उन्हें शिक्षा नहीं दी जाती थी, पिछड़ी जातियों को अछूत माना जाता था, इन पक्षों में सुधार हुआ हैं गुरु महाराज विकास क्रम की उच्चतम देन हैं, उनके प्रभावों से बड़े-2 पापी, खूंखार जनों के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है।

इसके बाद श्रीमान जगदीश प्रसाद जी, चण्डीगढ़ ने अपने जीवन में आए आश्चर्य जनक

परिवर्तन का ज़िकर किया कि कैसे एक शराबी, कबाबी, सिगरेट पीने वाले, शिकार करने वाले, चोरी करने वाले व अनेकों पापों में ग्रस्त हुए जन को गुरू महाराज के प्रभावों ने बदल दिया। मां और पत्नी को दुखी करने वाले को उनकी सेवा में खुशी अनुभव करने वाला बना दिया। यह परिवर्तन हृदयों को छू रहे थे। इस सभा में 100 से भी ऊपर हाज़री थी, जो प्रभावित अनुभव कर रही थी।

21.3.2019, सुबहर 9.00 बजे :- (पति पत्नी के सम्बन्ध में विशेष सभा) गुरू महाराज का छवि द्वारा अर्चन करके, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। महिमा विषयक भजन के बाद गुरू महाराज द्वारा रचित "सच्चे पति और पत्नी वह जो, उच्च लक्ष्य रख मेल बढ़ावे" भजन गाया गया।

इसके बाद सभापति जी ने बताया कि बहुत सारे धर्मों में सम्बन्धों को धर्म प्राप्ति में रुकावट माना है। कई स्त्री को तुच्छ समझते हैं। परन्तु गुरू महाराज ने फरमाया है कि कोई जन जितना धर्मवान होता जाएगा, वह अपने सम्बन्धों में उतना ही कर्तव्य कर्मों को जानता जाएगा और उन्हें पूरा करेगा। पति पत्नी एक दूसरे के दोस्त होते हैं, हाकिम नहीं होने चाहिए। सभापति जी ने अपने जीवन में गुरू के प्रभावों से आए हितकर मेल को बताया और इस सम्बन्ध में आए कई परिवर्तनों को बताया, जिससे सारा वातावरण बहुत प्रभावशाली बन गया।

इन सभाओं से दिलों पर जो उच्च प्रभाव पड़े, उसके विषय में निम्नलिखित जनों ने भाव प्रकाश किए।

भाव प्रकाश

1. **श्रीमान मेहर सिंह जी :-** इस सारे प्रोग्राम में कई जन कहते है कि मेरा सब से अधिक योगदान है, पर यह ठीक नहीं है। इसमें लोकल धर्म सम्बन्धियों, श्रीमान अजीत सिंह जी, प्रिंसीपल सरताज सिंह जी, श्रीमान जोगिन्द्र सिंह जी पम्मा (इन सब का नाम लेते हुए उनका दिल भर आया) का बहुत बड़ा रोल है। दूसरा श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी, श्रीमान गुरूदेव राज जी, श्रीमान सुन्दर लाल जी, परिवार समेत, श्रीमान बलदेव सिंह जी के सपुत्र, सब का हार्दिक भावों से धन्यवाद करता हूं। सबसे बढ़कर उन्होंने उन जनों का धन्यवाद किया, जिन्होंने इस सत्संग में शामिल होकर इसकी रौनक बढ़ाई। सभा करवाने वालों का भी बहुत बहुत धन्यवाद किया।

फिर उन्होंने अपनी धर्म पत्नी के उपकारों का भरे दिल से भावुक होकर ब्यान किया, विशेषकर उन्होंने मेरे भाई साहिब की कैंसर की बीमारी में जो फिकर और सेवा की है, आज वह महसूस हो रही है। ये मुझे कहती रहीं कि भाई बार बार नहीं मिलते। मुझे ज़ोर देकर कहती रहीं कि आप ज्यादा से ज्यादा समय देकर ईलाज करवाओ। स्वयं भी तीन महीने बहुत फिक़र से सहायता करती रहीं, उनका यह उपकार मुझे कभी नहीं भूलना चाहिए। मेरे परिवारिक जन इनकी प्रेरणा से सभाओं में आते रहे हैं। इनका मेरे जीवन में जो स्थान है, मैं उससे ग़ाफिल रहा हूं।

2. **श्रीमान राधे श्याम जी (हिसार):-** उन्होंने कहा कि कल मेरी सभा में एक धर्म सम्बन्धी ने प्रश्न किया था कि आपको कभी देव प्रभाव मिले है? मैं कहता हूं कि हां, आज की सभा में जैसे हृदय पिघल रहे थे, अपने ऊपर विशेष रूप से झाड़ पड़ रही थी। यह होते हैं देव प्रभाव, अब देखो देव प्रभाव मिले हैं कि नहीं, स्वयं ही पता लग जाएगा।

फिर उन्होंने एक विशेष घटना का जिकर

किया। मेरा छोटा भाई पेपरों में गैरहाज़िर हो गया। मैं उसे दुखी होकर पीट रहा था। मेरी धर्मपत्नी, जो आज सभा में वर्तमान हैं, मुझे पीटने से रोकने के लिए बीच में आ गई। मैंने घृणा से पागल होकर उन्हें भी चपेड़ मार दी। मैं आप सब के सामने अपना गुनाह कबूल करता हूं और इनसे क्षमा मांगता हूं, यह मुझे क्षमा कर दें। मैं पण्डित होकर शराबी होकर, खून और गन्दगी से लथपथ होकर घर आता, तो यह साफ करती। एक दिन मैं शराबी दोस्त के साथ शराब पीता झगड़ पड़ा, वह मेरे से मजबूत था, उसने मुझे ज़ोर से मारा और मैने उसे कान पर काट दिया, उसके कान का काफी हिस्सा कट गया। इसके बाद खून और गन्दगी से लथपथ 12 बजे के बाद घर आए। पत्नी करवाचौथ के कारण मेरा इन्तज़ार कर रही थी, उसने न कुछ खाया था और न पीया था मैं बेसुध अवस्था में घर पहुँचा था। आज इस पवित्र वातावरण में अपना चण्डाल रूप सामने आकर दुखी कर रहा है। (उनका सारा भाव प्रकाश दिलों को छू रहा था)

3. प्रिंसीपल श्रीमान पी. सी. दीवान जी :– उन्होंने बताया कि मैं चार कलासें पढ़ा था, मेरी पत्नी की सहायता से मैं पढ़ा और एक उपकारी ने मुझे Vice Principal लगा दिया। मैं राधा स्वामी मत के प्रवचन करता, लोग मुझे गुरू जी गुरू जी कहते। उपदेशक बनकर और अन्धेरे में डूबता चला गया। एक नौजवान मुझे इस वातावरण में ले आया और सौभाग्य का द्वारा खुल गया। मुझे मेरा नीच रूप नज़र आने लगा। एक बहुत बड़ा पाप जिसने मुझे मेरी पत्नी से बेवफा बना दिया। मैं बदचलनी के घोर नर्क में डूबता गया। मेरे तीन बच्चे थे, मैं और किसी को घर में बसाने में तो असफल रहा परन्तु 8 साल मेरी पत्नी बच्चों समेत घर से बाहर रही। देव प्रभावों में मुझे मेरी महा घृणित अवस्था नज़र आने लगी। एक सभा में अपनी पत्नी, बच्चों और रिश्तेदारों और परिवारिक जनों, और अन्य जन जो मुझे गुरू समझते थे सबको सभा में बुलाया। इस सभा में अपनी महा घृणित, पापी और महा अपराधी अवस्था को साफ साफ कबूल करने के लिए मजबूर हो गया। आज 84 वर्ष की उमर में अपनी उस नीच अवस्था पर आंसू बहाता हूं। गुरू की कृपा से अब धर्मपत्नी का सच्चा सत्कार और सेवा करके अपने ऐसे पहाड़ जैसे पाप का परिशोध करने की कोशिश करता हूं, यह गुरू महाराज की सच्ची करामात है।

यह सारा दृश्य सबके दिलों को हिला रहा था और गुरू के आगे सजदा करने के लिए मजबूर कर रहा था।

4. श्रीमान मुकेश जी चावला :– मेरी शादी को 2 वर्ष हो गए, मेरी धर्मपत्नी मेरी हालत की परवाह न करके मेरी सेवा और सत्कार करती है। इनकी सरकारी नौकरी लग गई, सारा वेतन मुझे दे देती है। मैं न कोई काम करता हूं न कोई सेवा वा सत्कार करता हूं। इनका धन्यवाद करता हूं।

5. श्रीमती दविन्द्र कौर जी अध्यापिका :– श्रीमान जगीर सिंह जी के भाई वा उपकारी वा हमदर्द रूप का आंसू बहाते हुए वर्णन किया। उनकी साथी तीन अध्यापिकाओं ने कष्ट के समय जो उनकी सहायता की, उनका धन्यवाद किया। अपने धर्मपति प्रिंसीपल सरताज सिंह जी के सुन्दर व्यवहारों को विशेष रूप से अनुभव कर रही थी।

लगभग 20 सौभाग्यवान जोड़े पति पत्नी ने एक दूसरे का पुष्पों का हार डालकर सम्मान किया, बहुत सुन्दर दृश्य था। कुछ लोग हार घर ले गए ताकि वह यह साधन कर सकें। कई पति पत्नी झुककर, चरण स्पर्श करके एक दूसरे को सन्मान दे रहे थे।

(एक सेवक)

हितकर संग्राम

26.3.2019 से 29.3.2019, पदमपुर :– चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी और गोपाल कृष्ण जी और भटिण्डा से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी गंगानगर पहुँचे व श्रीमान बी.पी.सिंह जी उन्हें कार से पदमपुर बहुत खुशी और श्रद्धा से लेकर गए। मल्लेका से श्रीमान मेहर सिंह जी, श्रीमान सुखदेव जी, श्रीमान गुरुदेव राज जी और श्रीमान सुन्दर लाल जी को अपने साथ कार में लेकर आए। ठहरने का प्रबन्ध पहले से ही किया हुआ था। 8.30 बजे सभा रखी गई। श्रद्धालु और सेवक अच्छी संख्या में आकर लाभ उठाते रहे। कुल 8 सभाएं हुई, जो श्रद्धा, कृतज्ञता, उच्च वातावरण, देव समाज में हुए परिवर्तनों के विषय में थी। बहुत अच्छा मण्डल बनता रहा। सभा के बाद भी श्रोतागण प्रश्न पूछते रहे। दिन के समय भी कई शंकाओं को दूर करने और अपनी जिज्ञासा को तृप्त करने के लिए आते रहे। एक उच्च योग्यता प्राप्त डाक्टर साहिब ऐसी चर्चा में काफी समय लगाते रहे। शहर के माननीय पार्षद श्री राकेश कुमार जी और एक डाक्टर साहिब सत्संग में विशेष रुचि से शामिल होते रहे और लाभ उठाते रहे।

श्रीमान मेहर सिंह जी की प्रेरणा और हिम्मत से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और साथियों समेत लोकल स्कूलों में नीति शिक्षा कराने का संग्राम करते रहे। इन सभाओं में भी स्कूल स्टाफ और बच्चों ने अच्छी रूचि और उत्साह से भाग लिया। स्कूल अधिकारियों ने फिर ऐसी सभाएं रखने के लिए रुचि दिखाई।

गंगानगर, 23.3.2019 से 31.3.2019, शाम के 6 बजे :– उपरोक्त सात धर्म सम्बन्धियों के ईलावा श्रीमान डाक्टर मुन्शा सिंह जी और श्रीमान B.P. Singh जी भी प्रचार पार्टी के साथ गंगानगर पहुँचे जहाँ खत्री धर्मशाला में कमरे बुक किए हुए थे। लोकल धर्म सम्बन्धी श्रीमान प्रिंसीपल P.C दीवान जी, श्रीमान सुरिन्द्र भाटिया जी, अशोक जी, श्रीमान अनिल कुमार जी, बीबी बंदना जी, और श्रद्धालु यहां हुई चार सभाओं से लाभ उठाने के लिए पहुँचते रहे। इन सभाओं में नेचर क्या है, नेचर के नियम क्या हैं, धर्म क्या है और क्या नहीं है, देव समाज के अति कल्याणकारी मण्डल वा विशुद्ध परोपकार के भावों सम्बन्धी प्रभावशाली सभाएं होती रही। श्रीमान बलदेव सिंह जी की दो सभाएं विशेष प्रभावशाली थी।

इन सभाओं में मनु चावला जी व उनकी धर्म पत्नी भी शामिल हुई। यह दोनों देव समाज के नये सेवक हैं। इन्होंने पदमपुर में भी 6 सभाओं से अच्छा लाभ उठाया। इस जोड़े के ईलावा दो और पति पत्नी के जोड़े सभा के बाद अपने पारिवारिक जीवन सम्बन्धी विशेष सहायता लेने की विशेष रुचि दिखाते रहे। एक जोड़ा तो पिछले वर्ष से ही लाभ उठा रहा है। समाज की पुस्तके भी पढ़ रहे हैं। लोकल जनों में जैन साहिब भी सेवा में रुचि लेते है। 31.3.2019 को आख़िरी सभी थी। मल्लेका पार्टी इस सत्संग से बहुत लाभ उठाकर गए। और सत्संगों का प्रोग्राम बनाया गया। डेराबस्सी में 5 अप्रैल से 14 अप्रैल तक सत्संग रखने की सूचना दी गई।

थराजवाला :– 31.3.2019 को श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमान गोपाल जी गिदड़बाहा पहुँचे, जहां पहले ही श्री रशपिन्द्र सिंह जी अपनी गाड़ी लेकर इन्तज़ार कर रहे थे। वह सब धर्म सम्बन्धियों को देव समाज के पुराने ऐतिहासिक गांव थराजवाला में ले गए।

शाम को सब धर्म सम्बन्धियों को घर ले जाकर अगले दिन की सभा का प्रोग्राम बताया गया।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पहली अप्रैल को श्रीमान तेज सिह जी के घर सभा रखी गई जिसमें देव समाज के उच्च वातावरण के लाभ बताए गए। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने विशेष दर्द से भरकर ब्यान किया कि देव समाज से कटकर हम आत्मिक तौर पर विशेषकर और जीवन के बाकी पहलुओं में भी लुट जाते हैं। इन सत्संगियों ने जुलाई में सत्संग में आने का वायदा किया। हाजरीन ने इस सभा से काफी अच्छी प्रेरणाएं ली।

गुरू महाराज और विशेष सहायकारियों की कृपा से यह सात दिन का संग्राम हितकर प्रमाणित हुआ।

(एक सेवक)

पृष्ठ 8 का बाकी

मुझे मिलें, किसी और को न मिलें। और यदि किसी और को मिलें तो, तो ऐसा जन इन बरकतों से वंचित किया जावे। ईर्षा परायण जन यह बदराश्त ही नहीं कर सकता, कि किसी और की उन्नति का मार्ग खुले और यदि खुले, तो ईर्षा परायण के लिए ही खुले और बाकी सबके लिए बन्द रहे। एक लखपति सधवा स्त्री अपना कोई बच्चा न रखती थी। परन्तु इस कदर ईर्षा परायण थी कि यदि सुन लेती, कि किसी दलित के घर बच्चा पैदा हुआ है, तो ईर्षा में जल भुन कर सारा दिन खाना नहीं खाती थी। एक राजनीतिक लीडर जो देश की खातिर जेल में गया, जब वह जेल से बाहर आया, तो मैं उसको मिलने के लिए गया। मैंने उसके सामने एक और बहुत बड़े लीडर का वर्णन किया कि वह भी जेल में डाले गए थे, जिसका अफसोस है। मैंने यह ज़िकर किया ही था, कि वह आग बगूला हो गया और जोश में आकर कहने लगा, कि मेरे जेल में जाने के साथ उसका क्या मुकाबला?

इसलिए सुख अनुरागी जिस तड़पन में से गुजरते है, जिन दु:खों की आग में जलते हैं, उनका तो वर्णन ही नहीं हो सकता। भगवान् देवात्मा सच फरमाते हैं, कि नीच सुख अनुरागों का जीवन अधर्म का जीवन है। अनुचित दु:खों और अकाल मृत्यु का कारण है। इसलिए प्रत्येक सत्य धर्म अभिलाषी के लिए परम आवश्यक है, कि एक ओर वह परोपकार विषयक सात्विक भाव उन्नत करे और दूसरी ओर भगवान देवात्मा के देवरूप के साथ जीवन्त सम्बन्ध स्थापन करे। विशुद्ध परोपकार और देवरूप में ही नीच सुख अनुरागों की मृत्यु है और नाना प्रकार के अनुचित दु:खों और कष्टों से रक्षा है और सच्चे सुखों और असीम बरकतों की प्राप्ति है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts